2. हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था

1.‘ जानना ‘ शब्द की लेखक की व्याखा से आप कहाँ तक सहमत हैं ?

जानना शब्द की लेखक की व्याख्या से मैं सहमत हूँ। अकसर हम दूसरों को उसके नाम , पते, उम्र, ओहदे या जाति से ही जानते हैं। लेकिन सच में किसीको जानना है तो उसके दर्द और एहसास को समझना चाहिए। उसकी हताशा , असहायता, दुख और कठिनाई को जाने बिना जानना कभी पूर्ण नहीं होता।

2.कविता के शिल्प पक्ष पर लेखक के क्या–क्या निरीक्षण हैं ?

लेखक की राय में कविता का शिल्प पक्ष एकदम बारीक है। गद्य में लिखी हुई इस कविता में लिरिकल या गीतात्मकता का बोध भी खूब मिलता है। यह कविता कोई लोकगीत या गज़ल जैसा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देती है। ‘ जानता था ’ और ‘ नहीं जानता था ’ का प्रयोग अधिक आकर्षक बना है।

3.समानार्थक शब्द लिखें।

1.निराशा – हताशा 2.अनुभव – अहसास 3.शिल्पविद्या – कारीगरी 4.ज़रूरत – दरकार/आवश्यकता 5.सूक्ष्म – बारीक 6.स्वयं –खुद /आप से आप 7.निरंतर – लगातार 8.वर्णन – बयान 9.स्वाभाविकता – आनगढ़ता 10.संकट/कष्ट – मुसीबत 11.प्रसिद्ध - विख्यात 12.सहानुभूति - संवेदना 13. रीति - रूढि 14. स्वाभाविक - सहज 15. ज़ख्मी - घायल 16. पद - ओहदा

4.कवितांश का आशय

प्रस्तुत पंक्तियाँ समकालीन हिंदी साहित्य के विख्यात कवि श्री. विनोद कुमार शुक्ल की सुंदर कविता हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था से ली गई हैं। इस कविता में कवि जानना शब्द की हमारी जानी पहचानी रूढी को तोड देते हैं।

कवि कहते हैं कि सडक पर हताशा से बैठे एक अपरिचित व्यक्ति को देखते ही कवि उसकी समस्या को जल्दी पहचान लेते हैं। इसलिए उसकी सहायता करने केलिए उसकी ओर हाथ बढाते हैं। कवि के हाथ पकडकर वह खडा हुआ। कवि को वह नहीं जानता था, पर कवि के हाथ बढाने को जानता था। दोनों साथ-साथ चले। यानी कवि व्यक्ति को जानने के बदले उसकी समस्या को पहचाने। कवि का कहना है कि अकसर हम दूसरों को उनके नाम, पते, उम्र, ओहदे, जाति आदि के द्वारा जानते हैं। लेकिन असल में किसीको जानना है तो उसकी हताशा,निराशा, असहायता को जानना ही काफी होगा। किसीको व्यक्तिगत रूप से जानना और उसके दुख-दर्द, कठिनाई, समस्या और आवश्यकता आदि से जानना दोनों अलग है। मनुष्य की समस्या को पहचानने केलिए उसको व्यक्तिगत रूप से जानने की ज़रूरत नहीं है। सडक पर घायल पडे व्यक्ति को देखना पडे तो हमें समझना चाहिए कि वह व्यक्ति मुसीबत में है और उसे हमारी मदद की आवश्यकता है। यहाँ कवि मनुष्य को मनुष्य की तरह जानने की याद दिलाती है। कविता का संदेश है मनुष्यों के बीच मानवीय संवेदना का होना अनिवार्य है, जानकारियाँ नहीं।

जानना शब्द को एक विशेष अर्थ प्रस्तुत करनेवाली इस कविता की प्रासंगिकता सार्वकालिक है। कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है। गद्य में लिखी हुई इस कविता में गीतात्मकता का बोध खूब मिलता है। यह कविता कोई लोकगीत जैसा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देती है। जानन था और नहीं जानता था का प्रयोग अधिक आकर्षक बना है।

5. कविता की प्रासंगिकता पर टिप्पणी (हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था)

कविता के अनुसार कवि विनोद कुमार शुक्ल ने सडक पर घायल पडे व्यक्ति की, अपरिचित होने पर भी उसकी हताशा पहचानकर उसकी मदद की। व्यक्ति को पहचानने केलिए कवि को उसके व्यक्तिगत जानकारी की आवश्यकता नहीं थी। कवि व्यक्ति को सिर्फ उसके दुख-दर्द, कठिनाई, समस्या, आवश्यकता आदि से जानने की कोशिश की। लेकिन वर्तमान ज़माने के लोग ऐसा नहीं है। उनमें मनुष्यता देखने को भी नहीं मिलता। सभी को अपनी-अपनी बातें हैं। सामाजिक जीवन में एक दूसरे के बीच प्यार, सहानुभूति जैसी भावनाओं का होना ज़रूरी है। यदि किसी व्यक्ति को, चाहे अपरिचित हो आवश्यकता पडने पर सहायता देना ही जानना शब्द का सही अर्थ है। सडक पर घायल पडे एक व्यक्ति को देखना पडे तो हमें समझना चाहिए कि वह व्यक्ति मुसीबत में है और उसे हमारी मदद की ज़रूरत है। कवि के अनुसार मनुष्यों के बीच मानवीय संवेदना का होना अनिवार्य है, जानकारियाँ नहीं। जानना शब्द की हमारी जानी-पहचानी रूढी पूरी तरह बदल देनेवाली यह कविता मनुष्यत्व रहित इस ज़माने में बिलकुल प्रासंगिक है।

6. टिप्पणी – जानना शब्द की लेखक की व्याख्या

जानना शब्द की लेखक की व्याख्या से मैं सहमत हूँ। यहाँ लेखक ने जानना शब्द की हमारी उस जानी-पहचानी रूढी को तोड दिया है, जो व्यक्ति के नाम, पते, उम्र, ओहदे या जाति से जानने को जोडती है। प्रस्तुत टिप्पणी में लेखक ने जानना शब्द को नए ढंग से परिभाषित किया है। इस व्याख्या के पीछे लेखक का उद्देश्य व्यक्ति की आंतरिकता को जानने से है। जैसे अगर कोई व्यक्ति सडक पर घायल अवस्था में पडा है, तो हमें मदद करनी चाहिए। क्योंकि दो मनुष्यों के बीच लेखक ने मनुष्यता अहसास यानी मानवीय संवेदना का होना ज़रूरी माना है – जानकारियों का नहीं। किसी व्यक्ति की मुसीबत में सहायता करना चाहिए न कि जब हम उसे जानते हैं तभी उसकी मदद करें।

7. टिप्पणी- मनुष्य को मनुष्य की तरह जानना है

समकालीन हिंदी कवि विनोद कुमार शुक्ल की हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था कविता पर नरेश सक्सेना लिखी टिप्पणी में जानना शब्द को एक विशेष अर्थ प्रस्तुत किया है। यह कविता हमारी जानी पहचानी रूढी को तोड देते हैं। मनुष्य की समस्या को पहचानने केलिए उसको व्यक्तिगत रूप से जानने की ज़रूरत नहीं। किसीकी मदद करने केलिए उसकी दुख –दर्द और एहसास को समझना ही उचित होगा। यानीएक व्यक्ति को जानने केलिए उसके नाम , पते, उम्र, ओहदे, जाति अदि की ज़रूरत नहीं। उसकी हताशा , निराशा, असहायता या उसके संकट को जानना ही सच्चा जानना है। मनुष्य को मनुष्य की तरह जानना चाहिए। सडक पर घायल पडे या मुसीबत में पडे अपरिचित व्यक्ति को देखकर उसकी मदद करना सच्चे मनुष्य का दायित्व है। व्यक्ति को जानने के बदले उसकी आवश्यकता या समस्या पहचानकर उसे ज़िंदगी की ओर वापस ले आना ही असली जानना है। अर्थात दो मनुष्यों के बीच मनुष्यता का अहसास यानी मानवीय संवेदना होना ज़रूरी है , जानकारियाँ ज़रूरी नहीं हैं।

8. टिप्पणी – जीवन में मानवीय मूल्य का महत्व

हरेक व्यक्ति के जीवन में मूल्यों का अत्यधिक महत्व है। हमारा व्यक्तित्व और चरित्र हमारे द्वारा बनाए गए मूल्यों के आधार पर बनता है। अच्छे मूल्य हमें समाज में दूसरों की ज़रूरतों के प्रति मानवीय और संवेदनशील बनाते हैं। मूल्य मनुष्य को मनुष्य बनाते हैं , इसके बिना एक आदमी जानवर से कम नहीं होगा। जीवन की समस्याओं से बचने में मानवीय मूल्य आम जनता की मदद करती है। हमें दूसरों की परेशानियाँ जानकर उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए। जो विपत्ति के समय दूसरों की सहायता करता है , वही सच्चा मानव है। दूसरों की परेशानियों को हमें अपनी परेशानियाँ जैसा मानना चाहिए। हमें सहजीवियों के साथ करुणा एवं स्नेहपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। दूसरों केलिए अपने जीवन तथा जीवन की सुविधाएँ तक त्यागनेवाले बहुत लोग आज भी हमारे ज़माने में रहते हैं। ऐसे लोग अमर बन जाते हैं। हम सब परस्पर सहायता करनेवाला हो तो समाज के हरेक प्यार –भरे जीवन बिता सकेंगे। संक्षेप में हम सभी को अच्छे मूल्यों को अपनाना चाहिए और आनेवाली पीढियों को भी इसका महत्व सिखाना चाहिए।

9. लेख- अवयव/अंगदान का महत्व

अवयवदान जीवन का महादान है। हम 13 अगस्त को विश्व अवयवदान दिवस मनाते हैं। मरने के बाद और जीते जी कुछ लोग अपने अवयवों को दान करने केलिए तैयार होते हैं। हमें अपने अवयवों को दान करने से अनेकों के जीवन बचा सकते हैं। आँख , किडनी, हृदय, फेफडा, जिगर आदि शरीर अंग हम दान कर सकते हैं। इससे हम कुछ लोगों के अंधकार में डूबी ज़िंदगी को प्रकाशमय बना सकते हैं। रक्तदान से किसी ज़रूरतमंद की जान हम बचा सकते हैं। कुछ लोग मृत्यु के बाद अपने शरीर मेडिकल विद्यार्थियों को देने का निश्चय करते हैं। ऐसे लोग मरने के बाद भी समाज केलिए काम आते हैं। इसलिए हम भी अंगदान में शामिल हो जाएँ और कोई दूसरे की ज़िंदगी को बचाएँ।

10. टिप्पणी – सडक पर घायल पडे व्यक्ति को हम क्या-क्या सहायताएँ कर सकते हैं

सडक दुर्घटनाओं में बहुत लोग घायल पड जाते हैं। आज के ज़माने में घायल व्यक्तियों को बचाने में लोग हिचकते हैं। कुछ लोग उसे देखे बिना चला जाता है तो कुछ उसे एक शो की तरह देखता रहता है तो और कुछ उसकी फोटो खीचकर ज़्यादा लैक प्राप्त करने की कोशिश में लगे रहते हैं। यह तो कितनी बुरी बात है। उचित समय पर उसे अस्पताल पहुँचाना मनुष्यता का लक्षण है। घायल पडे व्यक्ति कभी किसी के घर की रोशनी होगी। अगर उसकी रक्षा न की जाए तो उस घर में अंधेरा छा जाएगा। एक और बात है आज उस व्यक्ति को हुआ हादसा अपने आपको या अपने परिवार में भी होने की संभावना है। इसलिए घायल व्यक्तियों को बचाने केलिए उचित कारवाई करना मनुष्य अपना कर्तव्य समझना चाहिए।

11. मान लें, सडक दुर्घटना में एक व्यक्ति घायल पडा। किसीने उसकी सहायता नहीं की। बहुत समय तक वह सडक पर ही पडा रहा। इस घटना पर एक रपट लिखें।

घायल आदमी पडे रहे लंबी देर सडक पर

स्थान : ------- कल शाम को किसी अज्ञात गाडी के टकराने से घायल हुए एक आदमी बहुत समय सडक के किनारे ही पडा रहा। उसके शरीर से खून बह रहा था। उसका एक हाथ टूट गया था। सिर पर भी चोट लग गई थी। उसकी हालत बहुत नाजुक थी। बहुत लोग उसके पास से गुज़रे। पर किसीने उसकी सहायता करने की कोशिश नहीं की। कुछ लोग उसे देखे बिना चला गया तो कुछ उसे एक शो की तरह देखता रहा तो और कुछ उसकी फोटो खीचकर ज़्यादा लैक प्राप्त करने की कोशिश में लगे रहे। भाग्य से अंत में एक बूढा आदमी आकर उसे अस्पताल पहुँचाया। उनके अवसरोचित हस्तक्षेप से उसकी जान बच गई। इससे पता चलता है कि आज के ज़माने के लोगों में मनुष्यता बहुत कम देखने को मिलते हैं। वे अपने –अपने बारे में ही सोचते हैं। दूसरों की मदद करने में वे हिचकते हैं। यह तो बहुत खतरनाक स्थिति है।

12. कवि ने रास्ते पर एक अपरिचित व्यक्ति को देखा। वह निराश था। कवि ने उस व्यक्ति के पास जाकर अपना हाथ बढाया। प्रस्तुत प्रसंग पर कवि और अपरिचित व्यक्ति के बीच होनेवाले संभावित वार्तालाप तैयार करें।

कवि - (हाथ बढाकर) आप उठिए।

व्यक्ति – क्या, आप मुझे जानते हैं ?

कवि - बिलकुल नहीं।

व्यक्ति – फिर क्यों मुझे उठाते हैं।

कवि - आप निराश हैं, यह मैं जानता हूँ।

व्यक्ति – यह आपको कैसे समझ गया ?

कवि - मुझे भी पहले निराशा का अनुभव हुआ था। इसलिए आपको देखते ही मुझे मालूम हो गया।

व्यक्ति – आपका यह स्वभाव मुझे बहुत प्रभावित किया।

कवि - क्या, हम कुछ दूर चलें ?

व्यक्ति – ठीक है, जी।

13. हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था टिप्पणी के आधार पर कवि विनोद कुमार शुक्ल की डायरी तैयार करें।

तारीख : ....

आज मैं दुकान की ओर चल रहा था। तब एक जगह पर एक वयक्ति बैठते हुए देखा। वह निराश दिख पडा। उसे मैं नहीं जानता था। मैं उसके पास गया। मैंने उसकी ओर हाथ बढाया। वह मेरा हाथ पकडकर मेरे साथ चला। हम इसके पहले कभी देखा भी नहीं था। किसी की हताशा जानने केलिए उसके नाम, पता, उम्र, ओहदा, जाति आदि जानने की आवश्यकता नहीं। मेरा यह काम से उसको आश्वासन हुआ होगा।

14. टिप्पणी के आधार पर कवि विनोद कुमार शुक्ल अपने मित्र के नाम पत्र लिखता है । शुक्लजी का वह पत्र कल्पना करके तैयार करें ।

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ । तुम्हारे पिछ्ले पत्र के जवाब में अभी तक लिख न सका । माफ करो यार ।

आज एक विशेष बात हुई । आज मैं दुकान की ओर चल रहा था । तब एक जगह पर एक वयक्ति बैठते हुए देखा । वह निराश दिख पडा । उसे मैं नहीं जानता था । मैं उसके पास गया । मैंने उसकी ओर हाथ बढाया । वह मेरा हाथ पकडकर मेरे साथ चला । हम इसके पहले कभी देखा भी नहीं था । किसी की हताशा जानने केलिए उसके नाम, पता, उम्र, ओहदा, जाति आदि जानने की आवश्यकता नहीं । मेरा यह काम से उसको आश्वासन हुआ होगा ।

तुम्हारे पिताजी और माताजी को मेरा प्रणाम कहना । छोटी बहन को मेरा प्यार । जवाब की प्रतीक्षा में,

सेवा में, — तुम्हारा मित्र

नाम — (हस्ताक्षर)

पता । — नाम

15. पोस्टर (संदेश) points – अंगदान का महत्व

1.अंगदान जीवन दान...
अंगदान जीवन में मुस्कान ।

2.अंगदान सर्वश्रेष्ठ दान...
स्वर्ग में स्थान मिलने को करो अंगदान ।

3.अंधविश्वास को छोडिए...
अंगदान में सहयोग दीजिए ।

4.मृत्यु के बाद दीजिए दूसरों को प्राण...
आगे बढिए और कीजिए अंगदान ।

5.करो दान किड्नी,नेत्र,हृदय,जिगर और देह की...
अपनी मृत्यु के बाद किसीको जीवित रहने को मदद करें ।

6.जीते जीते रक्तदान जाते जाते अंगदान
और जाने के बाद नेत्रदान और देहदान।

विश्व अंगदान दिवस – अगस्त 13

16. पोस्टर (points)संदेश – सडक सुरक्षा

1. यातायात की सुरक्षा नियमों में सख्ती
तभी मिलेगी, दुर्घटनाओं से मुक्ति
2. सुरक्षित जब रहेंगे आप
तभी दे पाएँगे अपनो के साथ
3. दुपहिये वाहन पर तीन सवारी न बिठाएँ
गाडी चलाते वक्त ज़्यादा मस्ती करना खतरा है ।
4. शराब पीकर गाडी न चलाएँ
गाडी चलाते वक्त मोबाइल, धूम्रपान आदि न कराएँ
5. सडक पर वाहन धीमा चलाये, तेज़ रफ्तार से नहीं
6. चौपहिया वाहन चालक सदैव सीट बेल्ट पहने
दुपहिया वाहन चालक हेलमेट
7. सही दिशा से ओवरटेक करें
हरेक जीवन अनमोल है
8. रेलवे पटरियों को पार करते वक्त रेलवे क्रॉसिंग का उपयोग करें
9. 18 साल के कम उम्र के बच्चे गाडी चलाना कानूनी जुर्म है ।

17. टिप्पणी के आधार पर संदेशात्मक पोस्टर तैयार करें ।

एक व्यक्ति की
हताशा
दूर करने केलिए
उसको जानने की आवश्यकता नहीं है ।
असहाय व्यक्तियों की हताशा दूर करें ...
उनको आस्वासन दें ।
यह हमारा कर्तव्य है ।

18. पोस्टर (points)संदेश – नेत्रदान महादान

1. जीवन का अनमोल वरदान
नेत्रहीन को नेत्रदान
2. नेत्रदान करेंगे
दुनिया फिर से देखेंगे
3. नेत्रदान का संकल्प लें
ताकि किसी का अंधेरा जीवन उजाले से भर जाए
4. जाने से पहले किसीको दे दो जीवनदान,
अमर रहना है तो कर दो नेत्रदान ।
5. नेत्रदान से बडा कोई दान नहीं है,
जिससे जीव निर्जीव होकर भी दूसरे के काम आ सकता है ।
6. नेत्रदान कीजिए,
मानवता के हित में काम कीजिए ।
7. आँखों को कभी मिटने न दें,
जीवन के पश्चात भी इन्हें जीने दे ।
8. नेत्रदान मरके भी ज़िंदा रहने का
अनमोल वरदान है ।

SREEJITH R. KOVOOR VARKALA. SCRIPTS PUBLICATIONS

19. पोस्टर (points)संदेश – सडक पर घायल पडे लोगों की जान बचाना मनुष्यता है

1. घायलों को जल्दी जल्दी पहुँचाएँ अस्पताल
   रक्त बहाकर उन्हें वहाँ पडने न दें
2. सडक पर घायल पडे को बचाना मनुष्यता है
   हरेक व्यक्ति की जान कीमत है
3. घायल पडे लोगों को देखे बिना गुज़रना नहीं चाहिए
   मोबाइल पर फोटो खींचने पर नहीं,
   उसकी रक्षा करने में हमारा ध्यान होना चाहिए ।
4. घायल पडे की जान बचाएँ
   उनके घर का प्रकाश मिटने न दें
5. ध्यान रखें, उसे देखे बिना जाने वाले आपको ही
   यही हालत होने की संभावना है
6. घायलों का फोटो खींचकर लैक मिलने में नहीं
   उसपर मनुष्यता दिखाने में होना है हमारा ध्यान

20. पोस्टर – रक्तदान का महत्व

रक्तदान जीवनदान

1. रक्तदान को बनाइए अभियान,
   रक्तदान करके बचाइए जान ।
2. रक्त के मोल को जानो,
   उसमें छुपी जिंदगी को पहचानो ।
3. रक्तदान कीजिए
   राष्ट्रीय एकात्मता बढाइए ।
4. आपके रक्तदान के कुछ मिनट का मतलब है
   किसी ओर केलिए पूरा जीवनकाल ।
5. रक्तदान इंसानियत की पहचान,
   आओ करो रक्तदान ।
6. रक्तदान अपनाओ
   सबका जीवन बचाओ ।
7. रक्तदान करने से नहीं होती शरीर में कमज़ोरी,
   रक्तदान करने में कभी मत करना सोची समझी ।
8. मानवता के हित में काम कीजिए
   रक्तदान में भाग लीजिए ।

विश्व रक्तदान दिवस – जून 14

ADDITIONAL QUESTIONS

1. कविता की रचयिता कौन है ? **ANS –** विनोद कुमार शुक्ल
2. कविता में ' **मैं** ' किसका सूचक है ? **ANS –** कवि का
3. कवि ने रास्ते पर किसको देखा ? **ANS –** अपरिचित/ हताश व्यक्ति को
4. रास्ते पर वह व्यक्ति कैसे बैठा था ? **ANS –** हताशा से
5. कवि ने अपरिचित व्यक्ति को किस स्थिति में देखा ? **ANS –** हताशा या निराशा की स्थिति में
6. क्या, उस निराश व्यक्ति कवि का कोई परिचित व्यक्ति था ?
   ANS – नहीं, वह अपरिचित व्यक्ति था, लेकिन कवि ने उसे देखकर ही समझ लिया कि वह व्यक्ति निराश है ।
7. कवि ने उस व्यक्ति के सामने क्यों हाथ बढाया ? **ANS –** व्यक्ति की समस्या पहचानकर उसकी सहायता करने केलिए
8. ' हाथ बढाना '- का मतलब क्या है ? **ANS -** सहायता करना
9. व्यक्ति की हालत समझकर कवि ने क्या किया ? **ANS –** कवि ने उस व्यक्ति के पास गया और उसकी ओर हाथ बढाया ।
10. कवि ने हाथ बढाया तो उस व्यक्ति ने क्या किया ? **ANS –** व्यक्ति ने कवि का हाथ पकडा और उनके साथ चलने लगा ।
11. ' हम दोनों साथ चले'- कौन-कौन साथ चले ? **ANS -** कवि और हताश व्यक्ति
12. ' व्यक्ति को मैं नहीं जानता था/ हताशा को जानता था '- इस कथन से कवि का कौन-सा मनोभाव प्रकट होता है ?
    ANS – हमें किसी व्यक्ति को उसके व्यक्तिगत जानकारियों से जानने के बदले उसकी हताशा से जानने की कोशिश करना चाहिए ।
13. ' दोनों एक दूसरे को नहीं जानते थे/ साथ चलने को जानते थे '- इसका मतलब क्या है ?
    ANS – मनुष्य को एक दूसरे की मदद करनी चाहिए ।
14. ' व्यक्ति को मैं नहीं जानता था '- इससे कवि क्या कहना चाहते हैं ?
    ANS – कवि व्यक्ति को उसके व्यक्तिगत जानकारियों से जानना उचित नहीं मानते ।
15. ' मैं उसकी हताशा को जानता था '- इससे कवि क्या कहना चाहते हैं ?
    ANS – कवि व्यक्ति को उसकी हताशा, दुख-दर्द, समस्या, आवश्यकता आदि से जानना चाहते थे ।
16. 'अपरिचित होने पर भी कवि ने हताश व्यक्ति की सहायता की ।'- इससे क्या संदेश मिलता है ?
    ANS – किसी व्यक्ति की सहायता करने केलिए उसको व्यक्तिगत रूप से जानने की ज़रूरत नहीं है । उसकी हताशा, दुख-दर्द, समस्या, आवश्यकता आदि को पहचानना ही असली जानना है ।
17. यह कविता के टिप्पणीकार कौन है ? **ANS –** नरेश सक्सेना
18. शुक्ल जी की कविता की विशेषताएँ क्या-क्या हैं ? **ANS –** मौलिकता और भाषा की अनगढता
19. कविता में कवि किस शब्द के रूढिग्रस्त अर्थ को बदल देते हैं ? **ANS –** जानना शब्द के
20. ' स्थायी ' किसे कहते हैं ? **ANS –** लोकगीतों में बार-बार आनेवाले शब्दों को स्थायी कहते हैं ।
21. कविता में लोकगीत की स्थायी की तरह किन-किन शब्दों का प्रयोग हुआ है ? **ANS –** नहीं जानना और जानना

SREEJITH R. KOVOOR VARKALA, SCRTUS PUBLICATIONS

22. किसीको जानने केलिए हमें क्या करना चाहिए ? **ANS –** हमें उसकी हताशा, निराशा, असहायता या उसके संकट को जानना चाहिए।

23. ‘ जानना ‘ शब्द की हमारी जानी-पहचानी रूढी क्या है ? **ANS –** व्यक्ति को उसके नाम, पते, उम्र, ओहदे या जाति से जानना।

24. ‘ जानने ’ का असली आधार क्या है? ANS - व्यक्ति को उसकी हताशा से जानना

25. कवि के मत में व्यक्ति को जानने का मतलब है ? **ANS –** उसकी हताशा से जानना

26. सडक पर घायल पडे अपरिचित व्यक्ति को देखकर हमें क्या करना चाहिए ? **ANS –** उसकी मदद करनी चाहिए।

27. कविता में ‘ मदद की ज़रूरत ’- का मतलब क्या है ? **ANS –** सांत्वना देकर अस्पताल पहुँचाना

28. हमें किन-किन व्यक्तियों की मदद करनी चाहिए ? **ANS –** हताश, असहाय और संकट में पडे

29. कविता में कवि का कौन सा मनोभाव प्रकट है ? **ANS –** मनुष्य में मानवीय संवेदना का या मनुष्यता का बोध होना अनिवार्य है।

30. कविता का संदेश क्या है ?

ANS – दो मनुष्यों के बीच मनुष्यता का अहसास यानी मानवीय संवेदना होना ज़रूरी है, जानकारियाँ ज़रूरी नहीं हैं।

31. कविता पर टिप्पणी लिखते समय हमें किन-किन बातों पर ध्यान देना चाहिए ?

ANS – कवि और कविता का परिचय, कविता का आशय, भाषापरक विशेषताएँ और कविता की प्रासंगिकता पर अपना विचार।

32. ‘ व्यक्ति को न जानना ’ और ‘ हताशा को जानना ’ का मतलब क्या है ?

ANS – व्यक्ति को नहीं जानना - का मतलब है व्यक्ति को जानना उसके नाम, पते, उम्र, ओहदे, जाति आदि जानना नहीं है।

हताशा को जानना – का मतलब है व्यक्ति को जानना उसकी हताशा, निराशा, असहायता, संकट आदि को जानना है।

33.‘ जानना ’, ‘ नहीं जानना ’ इन शब्दों की व्याख्या से आप कहाँ तक सहमत हैं? अपना विचार लिखें।

कवि के अनुसार जानने का मतलब व्यक्ति को उसकी हताशा, निराशा, असहायता, उसके संकट आदि से जानना है। नहीं जानने का मतलब व्यक्ति को जानना उसके नाम, पते, उम्र, ओहदे, जाति आदि से नहीं है। व्यक्ति को जानने केलिए उसकी व्यक्तिगत जानकारियों की ज़रूरत नहीं, उसके दुख-दर्द, कठिनाई, समस्या, आवश्यकता आदि को जानना काफी है।

34. आशयवाली पंक्तियाँ लिखें।

1.मैं व्यक्ति को नहीं केवल उसकी हताशा को जानता था।

Ans - व्यक्ति को मैं नहीं जानता था
हताशा को जानता था

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRIYS PUBLICATIONS